

PRIME MINISTER (DR. MANMOHAN SINGH): Hon. Chairman, Sir, I rise to associate myself with the warm sentiments expressed by so many hon. Members at a moment we part from several of our esteemed colleagues, who complete their tenures after fruitful years of service to the nation in this august House. Sir, the list of Members retiring in the near future is a long one and it is a representative sample of the many political parties in this House and of the States of our Union. It includes a number of distinguished parliamentarians who have served as Ministers as well as many colleagues whose contribution to setting a high standard of debate has been exemplary. Indeed, I have had the privilege of participating in debates involving many of these distinguished colleagues earlier. Sir, although it is said that we are bidding farewell to hon. Members who are retiring, I am confident that many of our colleagues will be contesting elections for a fresh term. To them I would only say that I welcome a further opportunity to meet on the floor of this august House. As for those colleagues and friends who may rejoin to the service of the nation in different capacities while they may be leaving this House, I am certain that they do not do so to retire from public life. Ours is not a profession; it is a vocation and for many colleagues it is a calling, an opportunity, to work for our people. My interaction with all of you has shown me that irrespective of the nature of our debates, we have put the interest of our country first to serve our people. Therefore, for all of us, there can be no question of retirement from public service. Therefore, to all the colleagues and friends whose tenure will soon be complete, I wish you every success in the future. Thank you, very much.

VALEDICTORY REMARKS

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, we come to the end of this Session which had commenced on Friday, the 4th of June 2004. This 21st Session of Rajya Sabha was its first one after constitution of the 14th Lok Sabha and formation of the new UPA Government. It is a matter of great happiness and honour for this House that its one Member has become Prime Minister of the country and is now the Leader of the House. We extend our heartiest felicitations to him.

[10 June, 2004]

RAJYA SABHA

In this Session, 12 newly elected Members joined the House. I am sure they would make rich and valuable contribution to the House.

On the first day of the Session, obituary references were made with regard to the passing away of two sitting and three former Members of this House. A reference to the victims of the 23rd May IED blast in Jammu and Kashmir was also made.

The Hon. President addressed the Joint Session of both the Houses of Parliament on June 7. After laying the President's Address in the House, the Motion of Thanks on the Address was taken up. Unfortunately, the normal business of discussion on the President's Address could not take place despite the best of attempts and efforts. I am sure all of us are deeply concerned about our often-reiterated commitment to ensure effective functioning and conduct of business of the House. I urge all of you to seriously ponder and introspect as to how best we resolve conflicts and overcome situations of obstructions and interruptions. Let us through dialogue and building up mutual trust and understanding, find ways for smooth functioning of the House without having the need for interruptions or adjournments. All of us have an obligation to strengthen our democracy and uphold the dignity and prestige of this August House. I do hope the heat of the summer will be over soon, and by the time we meet again in the Monsoon Session, the environment would have turned pleasant and full of harmony and understanding.

I take this opportunity to thank the Leader of the House, the Leader of the Opposition, Leaders of various Parties and Groups, and all the hon. Members for their kind cooperation. I also thank the Deputy Chairman, Members on the panel of Vice-Chairman and the staff of the Secretariat for their help and cooperation.

Before we adjourn, I extend to all of you my hearty greetings and good wishes for the forthcoming festivals and auspicious occasions ahead.

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI JASWANT SINGH): Mr. Chairman, Sir, this was a very short Session, marking a stormy beginning and a stormy end and I hope very much not a stormy continuity. It marks the beginning of a new Government in office and we have wished them well. It also marks the termination of the term of about one-third of our Members. So, in many ways, Sir, it was a unique Session, in the beginning, in the end, being short, and we now adjourn for the arrival of the

monsoons and renewal of the House, and I must express my gratitude to you, sir, to the Deputy Chairman, to my colleagues in the Government now and the Leader of the House, as also all the officials for the short Session and for their cooperation. Thank you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Sir, thank you very much for giving me this opportunity, may be, for the last time, may not be for the last time, who knows the future! But I must once again thank all the Members of the Parliament. You have been extremely cooperative in allowing me to perform my duties, and in performing my duties, if in any way, I have not been able to come up to your expectations, you must excuse me because the constrain of time was the only consideration, and as Mr. Santosh Bagrodia said I even used to push him to get the Bills and the legislations enacted. This is part of the occupational hazards to be in the Chair. Thank you very much for your cooperation. It is a great experience even today when all the Members were so emotional in expressing their views, and I thank all those Members who said some very kind words for me. Thank you very much.

†संसदीय कार्य मंत्री और शहरी विकास मंत्री (श्री गुलाम नबी आजाद) :
माननीय चंयरमैन साहब, इस सदन में देश की वे तमाम हस्तियां रही हैं जिन्होंने हमको आजादी दिलाई और आज उन्हीं की वजह से इस लोकतंत्र में, डेमोक्रेसी में देश के सभी क्षेत्रों से, सभी भागों से, सभी जातियों से, सभी धर्मों से इसमें हम अपनी भवना रखते हैं। उनके प्रति उनको हमेशा हम भूल जाते हैं। मैं एक शेर से उन्हें याद करना चाहता हूँ :-

“ तेरे बाद अंधेरा रहेगा महफिल में,
बहुत चिराग जलाओगे रोशनी के लिए।

हमने कितने चिराग जलाए लेकिन फिर भी उतनी रोशनी नहीं होती जितनी बहुत कम लोगों ने इसदेश को दी थी। यह एक ऐसा सदन है जिसमें दुनिया के सबसे बड़े ताकतवर, हिन्दुस्तान के सबसे बड़े पूंजीपति, सबसे बड़े उद्योगपति चाहे फिल्म इंडस्ट्री के हमारे साथी हैं, उनका चाहे कितना भी नाम हो लेकिन वे भी यहां आने के लिए तरसते हैं। यह गौरव की बात है कि हम सब जो आज यहां मौजूद हैं, हम सबको अपने अपने दिलों की तरफ से यंहा आने का मौका मिला है। दुनिया की नज़रे हम पर हैं। मेरे ख्याल में जो लोग रिटायर हुए हैं और जो होने वाले हैं यह दुनिया हैं, यहां एक दफा जो जन्म लेता है, उसको वापस जाना ही है इसी तरह से वह राजनीति है, यह पार्लियामेंट है, एक दफा यहां चुनकर आना है तो रिटायर भी जरूर होना है लेकिन इस बात का हम जरूर ध्यान रखें कि हजारों करोड़ों लोगों की निगाहें हम पर लगी हुई हैं। वे जब हमको चुनकर भेजते हैं तो खास तौर से इस टेलीविजन के जमाने में लोगों की नज़रे हम पर हैं कि कि जिन लोगों को

† Transliteration of Urdu Script.

हमने चुनकर भेजा है, वे हमारे लिए क्या कर रहे हैं। गरीब किसान मजबूर दलित अल्पसंख्यक और करोड़ों की संख्या में पढ़े लिखे नौजवान, युवक और युवतियाँ जो काम मांगते हैं, रोजगार मांगते हैं वे हमारी तरफ नजरें बिछाएँ हैं कि हम उनके लिए क्या कर रहे हैं। इसलिए हमें जहाँ अपनी छवि ठीक करनी है, वहाँ हमें पूरे हिन्दुस्तान के लोगों के लिए एक मिसाल भी बनना है। मेरा ख्याल है कि हम इस सदन में कभी इसपर विचार करें कि हमको अलग अलग पार्टियों से संबंध रखते हुए भी कैसे आगे चलना है और वे कौन से मुद्दे हैं, जिन पर हमें मनमुटाव दूर करना है और किस सीमा तक हमें जाना है।

सभापति महोदय, आज से चार-पाँच साल पहले मैंने उस तरफ से भाषण किया था, कि हम बड़े नाराज होते हैं, खफा होते हैं जब अखबारों में हमारे लिए कुछ छपता है। जब मैं हम कहता हूँ तो उसमें सभी पार्लियामेंटरियन शामिल है, उसमें मैं केवल विपक्ष और सत्ताधारी पक्ष की बात नहीं करता हूँ। हम नाराज होते हैं अगर हमारी छवि पर कोई आंच आती है लेकिन मैं कहता हूँ कि हमारी छवि हम खुद बरबाद करते हैं, दूसरे नहीं बरबाद करते हैं। इधर वाले उन पर आरोप लगाते हैं उधर वाले हम पर आरोप लगाते हैं और इसलिए मैं कहना चाहूँगा कि

“मेरा अज्म इतना बुलंद है कि पराए शोलों का डर नहीं,
मुझे खौफ है आतिशें-गुल से कि यही चमन को जला न दे।

हम खुद एक दूसरे के लिए चिंगारी हैं, आतिश हैं, तूफान हैं। हम एक-दूसरे को खुद मिटाते हैं, कोई बाहर वाला हमको मिटा नहीं सकता। इसके लिए भी हमको सोचना है कि हम एक दूसरे की छवि को मिटाएँ नहीं, बल्कि बनाएँ हम विचारों पर बोल सकते हैं, हम नीतियों पर बोल सकते हैं, हम प्रोग्रामों पर बोल सकते हैं लेकिन एक दूसरे को नष्ट करने का जो प्रोग्राम हम बनाते हैं, उसमें हम खुद अपने आप ही जल जाते हैं, खुद ही मर जाते हैं।

माननीय चेयरमैन साहब, आज हमें आपके विचार सुनने का मौका मिला। जब आप मुख्यमंत्री थे, तब भी हमारी बात होती थी, हमारे बहुत से विचार आपस में मिलते हैं। इस सिलसिले में आपके नेतृत्व में हमको काम करना होगा और कोई समाधान निकालना होगा।

सभापति जी, जहाँ तक रिटायर हुए मेम्बरान का ताल्लुक है, मैं सरोज बहन की तरह नाम नहीं लूँगा क्योंकि फिर कुछ लोग नाराज हो जाएंगे, खफा हो जाएंगे लेकिन मैं यह कहूँगा कि सबका अपना-अपना योगदान रहा है और सबने कोशिश की है कि वह अपनी बात, अपनी कांस्टीट्यूएँसी की बात अपने लोगों की बात आपके सामने रखें। मैं इतना ही कहूँगा कि वह कोई गया हुआ वक्त नहीं है कि दोबारा लौटकर न आएँ। हमारे मेंबर्स ऑफ पार्लियामेंट तो ऐसे सितारे हैं कि इधर डूबे तो उधर निकले, उधर डूबे तो इधर निकले। कभी कभी इस हाऊस में डूबे तो उस हाऊस में निकले और उस हाऊस में डूबे तो इस हाऊस में निकलें यह तो बराबर जारी रहता आया है और मुझे लगता

है कि यह सिलसिला जारी रहेगा। निराश होने की जरूरत नहीं है। हम सब मिलकर जहां-जहां भी जाएंगे, उस चिराग को जलाते रहेंगे। वह सदन हो या सदन के बाहर हो वह चिराग है लोकतंत्र को जिन्दा रखना, वह चिराग है देश की एकता और अखंडता को जिन्दा रखना, वह चिराग है गरीबों की सेवा करना। हम चाहे किसी भू जगह हों, किसी पोजिशन में हों उस चिराग को जलाए रखना है। माननीय सभापति महोदय, मैं आपका बहुत-बहुत आभार प्रकट करता हूँ कि जिस लगन से आपने हमें लीडरशिप दी हैं पिछले कुछ सालों से इस सदन में हमें किसी को यह महसूस नहीं होता है और जिस तरह से घर का एक बुजुर्ग होता है तो हर इंसान की आशा होती है कि मैं बुजुर्ग के पास जाऊंगा, बड़े के पास जाऊंगा अगर मुझसे कोई अन्याय हुआ है तो उसको दूर करना है। चाहे हम विपक्ष में रहे या इस सत्ता में, सभी को आप पर विश्वास और भरोसा है। डिप्टी चेयरमैन साहिबा का भी मैं धन्यवाद करता हूँ कि बहुत लम्बे अरसे तक आपने यहां डिप्टी चेयरमैनशिप की। उसके लिए डिप्टी चेयरपर्सन, आपका बहुत बहुत आभार प्रकट करता हूँ आपको बहुत बधाई देता हूँ। जहां तक हमारे लीडर ऑफ दि अपोजिशन है, दो चीजें, पुराने लीडर ऑफ अपोजिशन में और आज के लीडर ऑफ अपोजिशन में कॉमन है। चाहे पार्टियां अलग हैं, सोच अलग हैं विचारधारा अलग है लेकिन एक चीज हमारे आज के लीडर ऑफ दि अपोजिशन में है और जो उस वक्त लीडर ऑफ दि अपोजिशन थे, जो कि आज माननीय प्रधान मंत्री हैं, उनके बारे में इतना ही कहूंगा कि

“इतने शीरी है तेरे लब के रकीब, गालियां खाकर बेमजा न हुआ।

दोनों इस लीडर ऑफ दि अपोजिशन की तरह आप तलवार भी चलाते थे और चलाते हैं लेकिन मरने वाले को यह मालूम भी नहीं कि तलवार चली या नहीं। जुबान की शालीनता, मिठास और प्यार अपनी बात कहने का जो अंदाज मनमोहन सिंह जी में था और मानवीय जसवंत सिंह जी में भी यह अपने आप में एक निराली चीज है इसी से आप के लोग भी प्रभावित होते हैं। हमारे जो पैनल ऑफ वाइस चेयरमैन हैं उनको भी बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, उनका भी आभार प्रकट करता हूँ। हमारे व्हिप, डिप्टी लीडर हमारे सेंक्रेटरी जनरल, राज्य सभा के हमारे जितने भी आफिसर्स हैं, हमारे वाच एंड वार्ड के आफिसर्स और मीडिया के सभी साथियों का इस अवसर पर मैं बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ कि सभी का अपने-अपने अंदाज से, अपने अपने तरीके से इस हाउस को चलाने में सहायता मिली। बहुत-बहुत धन्यवाद।

وزیر برائے پارلیمانی امور (شری غلام نبی آزاد): مائیے چئرمین صاحب، اس سدن میں دیش کی وہ تمام ہستیاں رہی ہیں جنہوں نے ہم کو آزادی دلائی اور آج انہیں کی وجہ سے اس لوک تنتر میں ڈیموکریسی

میں دیش کے سبھی شیتروں سے، سبھی جھاگوں سے، سبھی جاتیوں سے، سبھی دھرموں سے اس میں ہم اپنی جھاؤنا رکھے ہیں۔ ان کے پرتی، ان کو ہمیشہ ہم بھول جاتے ہیں۔ میں ایک شعر سے انہیں یاد کرنا چاہتا ہوں

تیرے بغیر اندھیرا رہے گا محفل میں

بہت چراغ جلاؤ گے روشنی کے لئے

ہم نے کتنے چراغ جلائے لیکن پھر بھی اتنی روشنی نہیں ہوتی جتنی بہت کم لوگوں نے اس دیش کو دی تھی۔ یہ ایک ایسا سدن ہے جس میں دنیا کے سب سے بڑے طاقتور، ہندوستان کے سب سے بڑے پونجی پتی، سب سے بڑے ادھیوگ پتی، چاہے فلم انڈسٹری کے ہمارے ساتھی ہیں، ان کا چاہے کتنا بھی نام ہو لیکن وہ بھی یہاں آنے کے لئے ترستے ہیں۔ یہ گورو کی بات ہے کہ ہم سب جو آج یہاں موجود ہیں، ہم سب کو اپنے اپنے دلوں کی طرف سے یہاں آنے کا موقع ملا ہے۔ دنیا کی نظریں ہم پر ہیں۔ میرے خیال میں جو لوگ ریٹائر ہوئے ہیں اور جو ہونے والے ہیں، یہ دنیا ہے، یہاں ایک دفعہ جو جنم لیتا ہے، اس کو واپس جانا ہی ہے، اسی طرح سے راج نیقی ہے، یہ پارلیمنٹ ہے، ایک دفعہ یہاں چن کر آنا ہے تو ریٹائر بھی ضرور ہونا ہے لیکن اس بات کا ہم ضرور دھیان رکھیں کہ ہزاروں کروڑوں لوگوں کی نگاہیں ہم پر لگی ہوئی ہیں۔ وہ جب ہم کو چنکر بھیجتے ہیں تو خاص طور سے اس ٹیلی ویژن کے زمانے میں لوگوں کی نظریں ہم پر ہیں کہ جن لوگوں کو ہم نے چن کر بھیجا ہے، وہ ہمارے لیے کیا کر رہے ہیں۔ غریب، کسان، مزدور، دلت، اقلیتیں اور کروڑوں کی سنکھیا میں پڑھے لکھے نوجوان، یووک اور یوتیاں جو کام مانگتے ہیں، روزگار مانگتے ہیں، وہ ہماری طرف نظریں بچھائے ہیں کہ ہم ان کے لئے کیا کر رہے ہیں۔ اس لئے ہمیں جہاں اپنی شبیہ ٹھیک کرنی ہے، وہاں ہمیں پورے ہندوستان کے لوگوں کے لئے ایک مثال بھی بننا ہے۔ میرا خیال ہے کہ ہم اس سدن میں کبھی اس پر بھی وچار کریں کہ ہم کو الگ الگ پارٹیوں سے سمبندھ رکھتے ہوئے بھی کیسے آگے چلنا ہے اور وہ کون سے مددے ہیں، جن پر ہمیں من مٹاؤ دور کرنا ہے اور کس حد تک ہمیں جانا ہے۔

سبھا پتی مہودے، آج سے چار پانچ سال پہلے میں نے اس طرف سے جھانکنا تھا کہ ہم بڑے ناراض ہوتے ہیں، خفا ہوتے ہیں جب اخباروں میں ہمارے لئے کچھ چھپتا ہے۔ جب میں "ہم" کہتا ہوں تو اس

میں سبھی پارلیمنٹری شامل ہیں، اس میں صرف وپکش اور ستہ دھاری پکش کی بات نہیں کرتا ہوں۔ ہم ناراض ہوتے ہیں اگر ہماری شبیہ پر کوئی آنچ آتی ہے لیکن میں کہتا ہوں کہ ہماری شبیہ ہم خود برباد کرتے ہیں، دوسرے نہیں برباد کرتے ہیں۔ ادھر والے ان پر آروپ لگاتے ہیں، ادھر والے ہم پر آروپ لگاتے ہیں اور اس لئے میں کہنا چاہوں گا کہ

میرا عزم اتنا بلند ہے کہ پرانے شعلوں کا ڈر نہیں

مجھے خوف ہے آتش گل سے کہ یہی چمن کو جلا نہ دے

ہم خود ایک دوسرے کے لئے چنگاری ہیں، آتش ہیں، طوفان ہیں۔ ہم ایک دوسرے کو خود مٹاتے ہیں، کوئی باہر والا ہم کو مٹا نہیں سکتا۔ اس کے لئے بھی ہم کو سوچنا ہے کہ ہم ایک دوسرے کی شبیہ کو مٹائیں نہیں، بلکہ بنائیں۔ ہم وچاروں پر بول سکتے ہیں، ہم نیتوں پر بول سکتے ہیں، ہم پروگراموں پر بول سکتے ہیں لیکن ایک دوسرے کو نشٹ کرنے کا جو پروگرام ہم بناتے ہیں، اس میں ہم خود اپنے آپ ہی جل جاتے ہیں، خود ہی مر جاتے ہیں۔

مانئے چٹرمین صاحب، آج ہمیں آپ کے وچار سننے کا موقع ملا۔ جب آپ مکھیہ منتری تھے، تب بھی ہماری بات ہوتی تھی، ہمارے بہت سے وچار آپس میں ملتے ہیں۔ اس سلسلے میں آپ کی سرپرستی میں ہم کو کام کرنا ہوگا اور کوئی سمدادھان نکالنا ہوگا۔

سبھاپتی جی، جہاں تک ریٹائر ہوئے ممبران کا تعلق ہے، میں سروج بہن کی طرح نام نہیں لوں گا کیونکہ پھر کچھ لوگ ناراض ہو جائیں گے، خفا ہو جائیں گے۔ لیکن میں یہ کہوں گا کہ سب کا اپنا اپنا یوگدان رہا ہے اور سب نے کوشش کی ہے کہ وہ اپنی بات، اپنی کانسنٹی ٹوینسی کی بات، اپنے لوگوں کی بات آپ کے سامنے رکھیں۔ میں اتنا ہی کہوں گا کہ وہ کوئی گیا ہوا وقت نہیں ہے کہ دوبارہ لوٹ کر نہ آئے۔ ہمارے ممبرس آف پارلیمنٹ تو ایسے ستارے ہیں کہ ادھر ڈوبے تو ادھر نکلے، ادھر ڈوبے تو ادھر نکلے۔ کبھی اس ہاؤس میں ڈوبے تو اس ہاؤس میں نکلے اور اس ہاؤس میں ڈوبے تو اس ہاؤس میں نکلے۔ یہ تو برابر جاری رہتا ہے اور مجھے لگتا ہے کہ یہ سلسلہ جاری رہے گا۔ نراش ہونے کی ضرورت نہیں ہے۔ ہم سب ملکر جہاں جہاں بھی جائیں گے، اس چراغ کو جلاتے رہیں گے۔ چاہے وہ سدن ہو یا سدن کے باہر اور وہ چراغ ہے لوک تنتر کوزندہ رکھنا، وہ چراغ ہے دیش کی ایکٹا اور اکھنڈتاکوزندہ رکھنا، وہ چراغ ہے غریبوں کی سیوا کرنا۔ ہم چاہے کسی بھی جگہ ہوں، کسی پوزیشن میں ہوں اس چراغ کو ہمیں جلائے رکھنا ہے۔

- ماننے سہاپتی مہودے، میں آپ کا بہت بہت آہار پرکٹ کرتا ہوں کہ جس لگن سے آپ نے ہمیں لیڈر شپ دی ہے پچھلے کچھ سالوں سے اس سدن میں، ہمیں کسی کو یہ محسوس نہیں ہوتا ہے اور جس طرح سے گھر کا ایک بزرگ ہوتا ہے تو ہر انسان کی امید ہوتی ہے کہ بزرگ کے پاس جاؤں گا، بڑے کے پاس جاؤں گا اگر مجھ سے کوئی ناانصافی ہوئی ہے تو اسے دور کرنا ہے۔ چاہے ہم اپوزیشن میں رہیں یا اس ستنے میں، سبھی کو آپ پر وشواس اور بھروسہ ہے۔ ڈپٹی چئرمین صاحبہ کا بھی میں دھنیواد کرتا ہوں کہ بہت لمبے عرصے تک آپ نے یہاں ڈپٹی چئرمین شپ کی۔ اس کے لئے ڈپٹی چئرمین آپ کا بہت بہت آہار پرکٹ کرتا ہوں، آپ کو بہت بدھائی دیتا ہوں۔ جہاں تک ہمارے لیڈر آف دی اپوزیشن ہیں، دو چیزیں پرانے لیڈر آف اپوزیشن میں اور آج کے لیڈر آف اپوزیشن میں یکساں ہیں۔ چاہے پارٹیاں الگ ہیں، سوچ الگ ہے، وچار دھارا الگ ہے لیکن ایک چیز ہمارے آج کے لیڈر آف دی اپوزیشن میں اور جو اس وقت لیڈر آف دی اپوزیشن تھے، جو آج ماننے پردھان منتری جی ہیں، ان کے بارے میں اتنا ہی کہوں گا کہ "اتنے شیریں ہیں تیرے لب کے قریب کہ گالیاں کھا کر بے مزہ نہ ہوئے"۔ دونوں اس لیڈر آف دی اپوزیشن کی طرح آپ تلوار بھی چلاتے تھے اور چلاتے ہیں لیکن مرنے والے کو یہ معلوم بھی نہیں کہ تلوار چلی یا نہیں۔ زبان کی شیریں، مٹھاس اور پیار اپنی بات کہنے کا جو انداز من موہن سنگھ جی میں تھا اور مانٹھے جسونت سنگھ جی میں بھی یہ اپنے آپ میں ایک نرالی چیز ہے اور اسی سے آپ کے لوگ بھی پرہاوت ہوتے ہیں ہم بھی بہت حد تک اس سے پرہاوت ہوتے ہیں اور آج بھی یہی باہ تے کہ من موہن سنگھ جی نے بھی اسی بھاشا کے لئے، اسی پریوگ کے لئے، آپ بھی پرہاوت ہوتے تھے اور ہم بھی پرہاوت ہوتے ہیں ہمارے جو پینل آف وائس چئرمین ہیں ان کو بھی بہت بہت بدھائی دیتا ہوں، ان کا بھی بہت آہار پرکٹ کرتا ہوں ہماروہپ، ڈپٹی لیڈر، ہمارے سکریٹری جنرل، راجیہ سبھا کے ہمارے جتنے بھی آفیسرز ہیں، ہمارے واچ اینڈ وارڈ کے آفیسرز، میڈیا کے سبھی ساتھیوں کا اس موقع پر میں بہت بہت دھنیواد کرتا ہوں کہ سبھی کی اپنے اپنے انداز سے، اپنے اپنے طریقے سے اس پاؤس کو چلانے میں مدد ملی۔ بہت بہت دھنیواد۔

"

ختم شد"

MR. CHAIRMAN: Now, before we adjourn the House *sine die*, we will have the National Song.

(The National Song, "*Vande Mataram*", was then played)

MR. CHAIRMAN: Now I adjourn the House *sine die*.

The House then adjourned *sine die* at fifty-nine minutes past one of the clock.